①

B.A.(म)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - थर्ड
Lecture - III

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

सुन्दर काण्ड (सप्रसंग व्याख्या):

"निर्धन करथि कुबेर, कुबेर करथि प्रभु निर्धन।
जे चाहथि से करथि, देव कौशल्या नन्दन॥"

प्रस्तुत पद्यांश मिथिलाभाषा रामायण 'सुन्दरकाण्ड' सँ लेल गेल अछि। एहि पद पदमे महावीर हनुमानक उक्ति अछि। महावीर हनुमान जखन माता जानकीक हरणक पश्चात प्रभु श्रीरामक सबामे, माता जानकीक अन्वेषणमे सागर पार लंका देश आयल छथि। एतय लंकाक राजधानी जतय लंकेश्वर रहैत छलाह, ओतय तकैत-तकैत माता जानकी अशोक वनमे गाछक नीचाँमे बैसल भेटल छथि। बहुत जाँच पड़तालक बाद श्री हनुमान जखन आश्वस्त भेला जे यैह थिकीह माता जानकी। तखन ओ प्रकट होइत छथि। बहुत तरहे सान्त्वना दैत कहैत छथि - माता चिन्ता नहि करू प्रभु श्रीराम त क्षणमे निर्धन के कुबेर आ कुबेर के निर्धन बना सकैत छथि। हे माता कौशल्या नन्दन प्रभु श्रीराम जखन जे चाहथिन से करै सकैत छथि। तहँ जे एतेक पैघ सागरकें फानि सकैत छथि। तहुँ जे एतेक पैघ सागरके फानि

सकलहुँ से हुनके प्रताप सँ। हुनके प्रतापसँ सेहो हम दशानन कें चलपट मारि सकैत छी। हमर वचन पर विश्वास करु। प्रभु देल ई मुद्रिका लेल जाउ। माता जानकीक मुद्रिका चिन्हि माथ लगौलनि। हे कपि आइ अहाँ स्वयं आबि हमरा प्राणदान कएलहुँ। हम प्राण देबा पर उतारू छलौं, अहाँक वचनसँ बहुत तोष-संतोष भेल।

"चूड़ामणि देल सहित विचार।
दीना दीन दयालुक हार॥
कागत मसि नहि अछि यहि ठाम।
कोटि कोटि कहि देब प्रणाम॥"

प्रस्तुत चौपाइक रचनाकार छथि कविश्वर चन्दा झा जे हुनक मिथिलाभाषा रामायण कें सुन्दरकाण्ड सँ लेल गेल अछि।

लंकेश्वर रावण द्वारा सीता हरणकेँ पश्चात समुद्र लाँघि महावीर हनुमान लंका पहुँचलाह। महावीर हनुमान अपन बुद्धि-बलक चमत्कार लंकापति रावण आ समस्त दुष्ट असुर देखा, लंकाकेँ डाहि, अपन प्रभु श्रीरामकेँ समाचार देबा हेतु प्रस्थान करबासँ पूर्व माता-सीता सँ भेंट करैत छथि आ आज्ञा माँगैत छथि। तखन माता सीता प्रभु श्रीराम कें अपन कुशल-समाचार देबय तकरा देलथिन संगहि अपन चूड़ामणि सेहो देलथिन

महावीर हनुमान छैं। माता कहलथिन, हलय
जागल आ रोशनाई त अछि नहि जे प्राणनाथकेँ
चिट्ठी पठबितहुँ। तखन हमर कोटि-कोटि प्रणाम
कहि देबैन्ह। ई हनुमान रघुवरकेँ तिलक देखबैत
कैल अछि। रावण कखनहुँ हमरा मारि-काटि देत, राक्षसी
सब हरदम कष्ट देबा पर उद्यत रहैत अछि। हम
त अपन प्राण त्यागक निर्णय कएल छलहुँ। मुदा अहाँ
आबि हमरा प्राणदान देल। प्रभुक समाचार देल, हुनका
हमरा प्रति स्नेह धरि नेह छन्हि से कथा सुनि
हमर जाइत प्राण घुरि आयल। हम प्रभुक प्रतापकेँ नीक
जकाँ जनैत छी एक समय प्रभु हमरा अंकमे शयन कैने
छलाह, तखन इन्द्रक बालक कौआ बनि आयल आ हमर
चरणाङ्गुष्ठ मे चोंच मारि कष्ट देने छलान्हि त प्रभु
श्रीराम हुनकेँ सिपाह बनाय चलौन्हि त ओ वापस
तीनू लोक घुमि आयल मुदा किओ रक्षा कय-
नितार नहि सकलखिन्ह पुनि हिनके शरण आयल
त प्रभु एकर आँखिये कनाह क छोड़ि देलखिन।

Somjit Kumar